राजाने मलोरे राणें

राजाने मलोरे राणें राए तणों, धरम जाता रे कोई दौड़ो।
जागो ने जोधा रे उठ खड़े रहो, नींद निगोड़ी रे छोड़ो।।

छूटत है रे खरग छत्रियों से, धरम जात हिंदुआन।
सत न छोड़ो रे सत वादियो, जोर बढ़्यो तुरकान।।

राज कुली रे रखन रजवट, जो न आया इन अवसर।
धरम जाते जो न दौड़िया, ताए सुर कहिए क्यों कर।।

हरिद्वार ढहाए रे उठाए तपसी तीर्थ, गौवध कैयों विघन ।
ऐसा जुलम हुआ जग में जाहेर, पर कमर न बांधी रे किन।।

बातने सुनी रे बून्देले छत्रसाल ने, आगे आए खड़ा ले तरवार।
सेवाने लई रे सारी सिर खैंच के,सांइए किया सैन्यापति सिरदार।।

प्रगटे निसान रे धूमरकेतु खय मास,पर सुध न करे अजूं कोई इत।
बेगेने पधारो रे बुध जी या समे, पुकार कहे महामत।।